Lecture No.- 56.

Online Class.
Date - 28/5/2020
Time -

Topic.

(1.) Shankar's Conception.

Dr. Sunita Kumari
Depart. of philosophy.
B.A Part. - I
Paper - iii (H.)
A.N.D. College Shahpur
Patory Samastipur.

Ans:-), शंकर ने अपने दर्शन में जगत को माया का खेल, पानी का बुलबुला और सर्प रज्जु विपर्यय जैसे उपमाओं से संकेत किया है। जिस प्रकार अज्ञानवश हम रस्सी में सांप सांप देख लेते हैं, उसी प्रकार अज्ञान के कारण हम ब्रह्म जो कि त्रिकाल अबाधित है सत है, में जगत को देख लेते हैं। ऐसे भ्रम का कारण माया है। माया के दो कार्य है - आरोपण और विक्षेपण, जैसे माया रस्सी के असली रूप को ढक लेती है यह आरोपण हुआ फिर उसका दूसरा रूप

P.T.O.

विक्षेपन साँप के रूप में मिलता है। ठीक उसी प्रकार माया ब्रह्म को वास्तविक स्वरूप पर आवरण डाल देती है और उसकी विक्षेपण जगत के रूप में प्रस्तुत करती है।

अतः जगत माया का खेल या भ्रम मात्र है। अज्ञान के कारण जिस प्रकार च्याकाश को हम वास्तविक समझते हैं, उसी प्रकार जगत अज्ञानवश वास्तविक दिखाई पड़ता है।

प्रश्न उठता है कि माया क्या है? शंकर ने माया और भ्रम या अविद्या और अभ्यास के बीच कोई अंतर नहीं किया है। माया ब्रह्म की शक्ति है, परन्तु उसका वास्तविक स्वरूप नहीं, ब्रह्म माया से अलग रह सकता है परन्तु माया ब्रह्म से। अलग नहीं रह ~~सक~~ सकता

P.T.O.

मिलता
ब्रह्म
आवरण
विक्षेपण
करती है।
का
अज्ञान
व्यवहा
समझते
जाते
खाई
माया
और
अभ्यास
नहीं
की
का
ब्रह्म
सकता
से
सकता
P.T.O.

है। परन्तु माया ब्रह्म से अलग नहीं रह सकती है। अब प्रश्न उठता है कि जब माया ब्रह्म का स्वरूप नहीं है तो ब्रह्म कैसे जगत् के रूप में उत्पन्न होता है ?

इस समस्या का समाधान शंकर ने एक उपमा के द्वारा करने का प्रयास किया है। जिस प्रकार कोई जादूगर अपनी जादू की प्रवीणता से एक सिक्के का अनेक सिक्का दिखलाया है,

बीज से वृक्ष उत्पन्न करता है, किसी की प्रवीणता से एक सिक्के का अनेक सिक्का दिखलाता है, बीज से वृक्ष उत्पन्न करता है,

किसी की गर्दन काट देता है और दर्शक जो जादू से अनभिज्ञ है, मुग्ध हो जाता है। e.t.c.

END